भाषा, साहित्य एवं भारतीय संस्कृति : वैश्विक परिदृश्य

हिंदी साहित्य के विविध आयाम : वैश्विक परिदृश्य

संपादक मंडल
राजेश अग्रवाल, डॉ.डी.विद्याधर, डॉ.सुषमा देवी, डॉ.डी.जयप्रदा, डॉ.सुरेश कुमार मिश्रा

प्रकाशक
मिलिन्द प्रकाशन
4-3-178/2, कन्दास्वामी बाग
हनुमान व्यायामशाला की गली
सुल्तान बाजार
हैदराबाद -500095
फोन : 24753737 / 32912529

अक्षर संयोजक
डॉ.सुरेश कुमार मिश्रा
7386578657

आवरण
वी.डिजाइन
फोन : 98855 06088

प्रथम संस्करण
2019

मूल्य
रु.825/-
(रुपये आठ सौ पच्चीस मात्र)

ISBN : 978-81-905891-5-5

HINDI SAHITYA KE VIVIDH AYAM : VAISHVIK PARIDRISHYA
Editors
Rajesh Agrawal, Dr.D.Vidyadhar, Dr.Sushma Devi, Dr.D.Jayaprada, Dr.Suresh Kumar Mishra

गंगा प्रसाद
GANGA PRASAD

राज्यपाल सिक्किम
GOVERNOR OF SIKKIM

राज भवन
गान्तोक–737103
(सिक्किम)
RAJ BHAVAN
GANGTOK-737103
(SIKKIM)

SKM/GOV/NGSA/2018/86
7th dec. 2018.

संदेश

बद्रुका वाणिज्य एवं कला महाविद्यालय तथा 'हिन्दी है हम विश्व मैत्री मंच', हैदराबाद के संयुक्त प्रयास से आयोजित हो रहे 'दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी संगोष्ठी' का समाचार पाकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। संगोष्ठी का विषय 'हिन्दी भाषा, साहित्य एवं भारतीय संस्कृति, वैश्विक परिदृश्य' अत्यन्त सादर्भिक व उपयुक्त है।

हमारी विरासत और संस्कृति का प्रमुख अंग हिन्दी भाषा है और भाषा रूपी माता की सुरक्षा और संवर्धन के साथ साथ व व्यापक प्रयोग से ही हम हिन्दी भाषा को जीवन्त रख सकेंगे, इसमें दो राय नहीं हो सकता। हिन्दी भाषा को आज के समय अनुकूल विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भी भाषा बनाना सबसे बड़ी प्राथमिकता होनी चाहिए। ऐसा किये बगैर हम वैश्विक स्तर पर हिन्दी भाषा को नहीं अपना पाएंगे और आज के युवाओं से नहीं जुड़ पाएंगी। इस दिशा में सामूहिक पहल हो और इस तरह के संगोष्ठी के माध्यम से भविष्य की रणनीति तय हो।

संगोष्ठी से जुड़े सभी भाषा प्रेमी देवियों और सज्जनों को सफलता की शुभकामना।

गंगा प्रसाद
(गंगा प्रसाद)

नई सदी के हिन्दी काव्य में बदलते परिवेश

-डॉ. अफ़सर जलिसा बेगम

साहित्य पर युगीन परिवेश का प्रभाव परिलक्षित होना स्वाभाविक बात है। प्रत्येक युग के परिवेश में एक अलग पृथकता होती है। जो उस युग विशेष को अन्य युगों से भिन्नता देती है। क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में जब परिवर्तन आते हैं तो उसके प्रभाव मनुष्य जीवन को भी बदल कर रख देते हैं। साहित्य और समाज का संबंध अटूट होता है। यहाँ तक कि विद्वानों ने साहित्य को समाज का दर्पण कहा है। जो सत्य भी है। साहित्यकार चाहे वह कवि हो या लेखक अपने परिवेश का अनुभवकर्ता, द्रष्टा और भविष्य का सुदूर पारखी होता है। जैसे-जैसे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, वैचारिक, दार्शनिक और प्रौद्योगिक धरातल पर बदलाव आएंगे तो मनुष्य का जीवन भी अवश्य प्रभावित होगा।

नई सदी के काव्य में भी नए परिवेश के दिग्दर्शन होते हैं। कवि के जीवन और आस-पास जो घटनाएँ घटित हुई उसने नई सदी के कवियों के मस्तिष्क में जगह बनाते हुए उनके हृदय को स्पर्श किया। उनकी कलम ने शब्दों के सहारे अपनी भावनाओं और विचारों को कागज़ पर आकार दिया।

नई सदी की हिन्दी काव्यधारा के इतिहास की परंपरा के प्रमुख कवियों में नागार्जुन, धूमिल, मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह, केदारनाथ अग्रवाल, चंद्रकांत देवताले, विनोद कुमार शुक्ल, मंगलेश डबराल, अरुण कमल, विष्णु खरे, शहरयार आदि के नामों का उल्लेख किया जा सकता है।

इस समकालीन नई कविता की बागडोर आज कई पीढ़ियों के हाथ में आ गई है। सुशील कुमार, महेश पुनेठा, कमलजीत चौधरी, सुरेश जैन, निदा नवाज़, संदीप कुमार सिंह, देवेंद्र आर्य, ज्ञान प्रका विवेक, कुरेशी ज़हीर, अंजली अग्रवाल, सुशीला टाकभौरे, कैलाश वानखेड़ इत्यादि अनेक अनगिनत नाम हैं जो नई सदी की काव्यधारा के कवियों में अपने नाम दर्ज कर चुके हैं।

नई सदी की हिन्दी कविता पुराने घिसे पिटे विषयों को छोड़कर नये रास्ते को चिंतन का विषय बना कर प्रस्तुत करती है। समय की भयावहता,

आतंक, हिंसा, आशंकाएँ, अपराधी वैश्विक बाज़ार का प्रभाव, तकनीकि क्रांति, चीज़ें खरीदने के प्रति लालसाएँ, भारतीय सांस्कृतिक का ह्रास तथा आम आदमी की ज़रूरते, स्त्री की यातनाएँ, बच्चों की शिक्षा-समस्याएँ, अनाचार, व्यभिचार, दुराचार, अत्याचार, भ्रष्टाचार, बेकारी, बेरोज़गारी, सांस्कृतिक मूल्यों का विघटन आदि अनके विषयों को नयी कविता खुलकर बयान करती है।

नई सदी पर विचार करते हुए प्रभाकर श्रोत्रिय कहते हैं- "अपनी शती की ओर हम कई संभावनाओं, आशंकाओं और प्रश्नों से देख रहे हैं। ये प्रश्न विज्ञान, विचार, राजनीति, अर्थशास्त्र, जाति, धर्म, पर्यावरण, सूचना प्रौद्योगिकी, कला, संस्कृति, हमारी मिट्टी, हमारी जनता से जुड़े हैं और ये सभी चीज़ें साहित्य से जुड़ी हैं क्योंकि इन्हीं सब तत्वों और अपादानों से साहित्य अपना काव्य और प्राणवायु ग्रहण करता है।"1

नई सदी का मनुष्य अपनी संस्कृति को छोड़ता चला जा रहा है और पाश्चात्य संस्कृति की ओर तेज़ी से कदम बढ़ा रहा है। वैश्वीकरण के इस युग में मनुष्य आर्थिक और मानसिक रूप से गुलामी की ओर बढ़ रहा है। उसे अपने देश से अच्छा विदेश, स्वदेशी वस्तुओं से अच्छी विदेशी वस्तुएँ, स्वदेशी जीवन शैली से अच्छी विदेशी जीवन पद्धति पसंद आ रही है।

आधुनिकता के अंधानुसरण में आज का मानव पुरातन मूल्यवान मूल्यों को छोड़ रहा है। उसके घर की वस्तुएँ भी इसका प्रमाण दे रही हैं-

"खूबसूरत घरों में नहीं रहते।
पीतल के लोटे, कांसे के कटोरे
मिट्टी के घड़े, खील बताशे।
वहाँ नहीं रहती गंगालज की बोतल
गीता, रामायण राधा कृष्ण शिव के कैलेंडर.....
खूबसूरत घरों में उगे रहते हैं
तमाम तरह के विदेशी फूल
खूबसूरत घरों में नहीं उगता तुलसी का पौधा।"2

भारत भूमि जो पवित्र संतों महात्माओं की पावन भूमि कहलाती है। इसका परिवेश दिन-ब-दिन बदलता जा रहा है। देश की आंतरिक

Scanned with CamScanner

की हिन्दी कविता देश-विदेश में बड़ी रुचि से पढ़ी और लिखी जा रही है। इसका भविष्य उन्नत है क्योंकि यह अपने बदलते परिवेश को समेट कर चलती है।

संदर्भ सूची:

1. वागार्थ पत्रिका, दिसंबर, 2009 अंक पृ.सं. 70
2. समकालीन हिन्दी कविता के बदलते सरोकार, डॉ. राधा वर्मा, पृ.सं. 25
3. 21वीं सदी की कविता संवेदना के नये स्वर, सं. डॉ. शैलजा भारद्वाज, पृ. 106-107
4. वीरेंद्र मिश्र-हिन्दी साहित्य का आधुनिककाल
5. देवेंद्रआर्य गज़ल नचिकेता, दिल्ली 2014, पृ. 150
6. ज्ञान प्रकाश विवेक गज़ल नचिकेता, दिल्ली, 2014, पृ. 112
7. कुरेशी ज़हीर, 'निकला न दिग्विजय को सिकंदर', इलाहाबाद 2016, पृ. 14

एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
शासकीय महिला महाविद्यालय
बेगमपेट, हैदराबाद

Scanned with CamScanner